Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.P.S.E.-7

भारत में सामाजिक आन्दोलन और राजनीति

(Social Movements and Politics in India)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Manish Kumar Tiwari,* M.A. (Political Science)

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

भारत में सामाजिक आन्दोलन और राजनीति

(Social Movements and Politics in India)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-3

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. सामाजिक आन्दोलन : अर्थ, महत्त्व और घटक 1

2. सामाजिक आन्दोलन के अध्ययनार्थ दृष्टिकोण : 14
   उदारवादी, गाँधीवादी और मार्क्सवादी

3. सामाजिक आन्दोलनों का वर्गीकरण, नए सामाजिक आन्दोलनों समेत 29

4. भारतीय समाज का लोकतंत्रीकरण और बदलता स्वरूप 39

5. भूमण्डलीकरण तथा सामाजिक आन्दोलन 51

6. राज्य, बाजार एवं सामाजिक आन्दोलन 60

7. दलित आन्दोलन 70

8. पिछड़ा वर्ग आन्दोलन 78

9. नृजातीय आन्दोलन : जनजातियों के विशेष संदर्भ में 86

10. नारी आन्दोलन 95

11. क्षेत्रीय आन्दोलन 104

12. धार्मिक और साम्प्रदायिक आन्दोलन 113

13. कृषक आन्दोलन 122

14. मज़दूर आन्दोलन 133

15. मछुआरा आन्दोलन 141

16. पर्यावरण और पारिस्थितिकी आन्दोलन 148

17. सामाजिक आन्दोलन और लोकतंत्र : एक मूल्यांकन 156

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारत में सामाजिक आंदोलन और राजनीति

(Social Movements and Politics in India)

M.P.S.E.-7

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. भारतीय सामाजिक आन्दोलनों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'सामाजिक आंदोलनों की परिभाषा' तथा पृष्ठ-4, प्रश्न 3

प्रश्न 2. लोकतंत्र ने भारतीय समाज को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-157, 'भारत में लोकतंत्र और सामाजिक परिवर्तन' पृष्ठ-158, प्रश्न 2

प्रश्न 3. संसाधन जुटाने के सिद्धांत को समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न 7

प्रश्न 4. भारतीय संदर्भ में सामाजिक सुधार कितने महत्त्वपूर्ण हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-40, प्रश्न 1, पृष्ठ-46, प्रश्न 1

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) भारतीय समाज में लैंगिक मुद्दे

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-98, प्रश्न 3

(ख) उदारीकरण और भारतीय समाज में बदलाव

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-44, प्रश्न 4

खण्ड-II

प्रश्न 6. वैश्वीकरण ने विकासशील देशों को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-56, प्रश्न 1

प्रश्न 7. स्वतंत्रता के बाद से भारतीय राज्य की बदलती स्थिति की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-60, प्रश्न 2

प्रश्न 8. बहुजन समाज पार्टी के विकास और विचारधारा की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-75, प्रश्न 2

प्रश्न 9. नृजातीय आंदोलन क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-91, प्रश्न 4

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) क्षेत्रीय आंदोलनों पर राज्य की प्रतिक्रिया

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-108, प्रश्न 1

(ख) भारत में संप्रदायवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-114, प्रश्न 1

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारत में सामाजिक आंदोलन और राजनीति

(Social Movements and Politics in India)

M.P.S.E.-7

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. सामाजिक आन्दोलनों के अध्ययन के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-15, 'गांधीवादी दृष्टिकोण', पृष्ठ-16, 'गांधीवादी दृष्टिकोण', पृष्ठ-18, प्रश्न 5, पृष्ठ-19, प्रश्न 6

प्रश्न 2. नये सामाजिक आन्दोलनों तथा उनकी प्रासंगिकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-32, प्रश्न 3, पृष्ठ-33, प्रश्न 4

प्रश्न 3. सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों की अन्तर-सम्बद्धता की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'सामाजिक आन्दोलन और राजनीतिक आन्दोलन'

प्रश्न 4. सुधार आन्दोलनों तथा क्रांतिकारी आन्दोलनों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-31, प्रश्न 2

प्रश्न 5. सामाजिक परिवर्तन का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-24, प्रश्न 3, अध्याय-4, पृष्ठ-42, प्रश्न 2, पृष्ठ-43, प्रश्न 3, पृष्ठ-46, प्रश्न 1

भाग-II

प्रश्न 6. मानव विकास सूचकांक और वास्तविकता की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-40, 'मानव विकास संदर्शिका तथा वास्तविकता', पृष्ठ-44, प्रश्न 4, पृष्ठ-49, प्रश्न 4

प्रश्न 7. सामाजिक आन्दोलनों में नेटवर्किंग और सहयोग कितना महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-55, प्रश्न 3

प्रश्न 8. बाजार की बदलती स्थिति तथा सामाजिक आन्दोलनों के प्रति इसकी प्रासंगिकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-62, प्रश्न 2, पृष्ठ-63, प्रश्न 3, पृष्ठ-67, प्रश्न 3

प्रश्न 9. बी.एस.पी. की उपलब्धियों तथा सीमाओं पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-75, प्रश्न 2

प्रश्न 10. सबाल्टर्न अध्ययन क्या है? भारतीय समाज का अध्ययन कैसे और क्यों महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-17, प्रश्न 3

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत में सामाजिक आन्दोलन और राजनीति
(SOCIAL MOVEMENTS AND POLITY IN INDIA)

सामाजिक आन्दोलन : अर्थ, महत्त्व और घटक | 1

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

अध्याय का विहंगावलोकन

राजनीति सामाजिक व्यवस्था का ही एक हिस्सा है। समाज में होने वाली गतिविधियों में राजनीति भी शामिल होती है। अत: समाज में होने वाले आन्दोलनों से राजनीति भी प्रभावित होती है। शुरू-शुरू में समाज में हुए आन्दोलनों का प्रभाव राजनीतिक संस्थाओं, उसके कार्यक्षेत्र, उसके कर्तव्य और साथ-साथ समाज में सत्ता या शक्ति के विभाजन एवं आवंटन सब पर पड़ता था। सामाजिक आन्दोलनों के अभाव में चर्च व उसकी सत्ता, औपनिवेशिक शासनों और फासीवादी शक्तियों के खिलाफ आवाज उठाना मुश्किल कार्य था। विभिन्न देशों में होने वाले सामाजिक आन्दोलनों ने उस देश की राजनीतिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन भी किया है। अगर फ्रांस और रूस में सामाजिक आन्दोलन न होते तो वहाँ न तो क्रमश: लोकतंत्र की स्थापना होती और न ही जारशाही से मुक्ति प्राप्त होती। वैसे ही जर्मनी के फासीवादी आन्दोलन, इस्लामिक देशों के इस्लामिक आन्दोलन, भारत का धर्मसुधार आन्दोलन और श्रीलंका के तमिल विद्रोह ने वहाँ के लोगों, वहाँ की राजनीति, वहाँ के आदर्शों और साथ-साथ वहाँ की संस्कृति को भी प्रभावित किया है। अत: सामाजिक आन्दोलन किसी राष्ट्र में चलने वाली प्रत्येक गतिविधि को कम या अधिक प्रभावित करते हैं और लोगों की आम भावनाओं की पूर्ति भी इन्हीं आन्दोलनों से होती है। अत: किसी भी देश की राजनीतिक व्यवस्था को समझना है, तो उस देश की सामाजिक व्यवस्था और उस देश में होने वाले सामाजिक आन्दोलनों की समझ होना बहुत आवश्यक है।

सामाजिक आन्दोलनों की परिभाषा

सामाजिक आन्दोलनों का अर्थ अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग लगाया जाता है। कुछ लोग इन्हें शहरीकरण अथवा ग्रामीण जीवन से मुक्ति के सन्दर्भ में प्रयोग करते हैं तो कुछ लोग उन संगठनों की गतिविधियों से इसका अर्थ लगाते हैं, जो समाज की भलाई के उद्देश्य से की जाती हैं। सामाजिक आन्दोलन का अर्थ सामूहिक गतिविधि या राजनीतिक गतिविधि व अलग-अलग देशों में उनकी प्रकृति को देखते हुए लगाया जाता है। 'सामाजिक आन्दोलन' शब्द 19वीं शताब्दी के शुरू में यूरोप में लोकप्रिय हुआ। उस समय यूरोप में लोग धर्म के चंगुल से मुक्ति और सामंतवादी व्यवस्था से मुक्ति पाना चाहते थे। वहाँ के लोग

www.neerajbooks.com

धर्म सुधार आन्दोलनों से प्रभावित होकर जनतांत्रिक अधिकारों और उनसे सम्बन्धित राजनीतिक संस्थाओं के लिए प्रयासरत थे। अधिकांश लोग इसे आर्थिक सम्बन्धों से भी जोड़ते हैं, जिसमें आर्थिक सत्ता में बदलाव से सामाजिक व राजनीतिक सत्ता भी बदलती है। यही कारण है कि अलग-अलग विचारकों ने अलग-अलग परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपनी विचारधाराओं के तर्कसंगत आधार को सही ठहराने के लिए सामाजिक आन्दोलन की कई परिभाषाएँ दी हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना विचार होता है। अत: सामाजिक आन्दोलन की परिभाषाएँ भी विचारक सापेक्ष हैं। सामाजिक आन्दोलन की परिभाषाओं के साथ-साथ इन आन्दोलनों की कार्यविधि व प्रक्रिया में भी सामाजिक व राजनीतिक विचारकों में मतभेद पाया जाता है, लेकिन अधिकांश विचारक सामाजिक आन्दोलन का अर्थ लगाते हैं–''सचेतन मन से, सामाजिक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से सामूहिक कार्रवाई, जो सुविचारित और समाज का भला करने के उद्देश्य से की गई हो, वह सामाजिक आन्दोलन कहलाता है।'' 'सामाजिक परिवर्तन' का अर्थ भी लोग अलग-अलग संदर्भों में लगाते हैं, लेकिन यह प्रयोजन सामान्य हित से जुड़ा होना चाहिए। कभी-कभी समाज में होने वाले छोटे-मोटे विरोध प्रदर्शन, आगजनी, मारपीट भी कालान्तर में जाकर बड़े सामाजिक आन्दोलनों का रूप ले लेते हैं।

सामाजिक आन्दोलन और राजनीतिक आन्दोलन

सामाजिक आन्दोलन और राजनीतिक आन्दोलन एक-दूसरे के काफी निकट होते हैं। सामाजिक आन्दोलनों का उद्देश्य अधिकांशत: राजनीतिक ही होता है, लेकिन कुछ विद्वान राजनीतिक आन्दोलन को सीमित अर्थ में प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ होता है–सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष या राज्य शक्ति की प्राप्ति के लिए आन्दोलन। जबकि सामाजिक आन्दोलन एक व्यापक शब्द है और इसमें लौकिक और अलौकिक दोनों सत्ताओं के लिए आन्दोलन होता है, लेकिन जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है, समाज एवं राजनीति एक-दूसरे के काफी निकट आ चुके हैं। अत: इन दोनों में काफी समानता पाई जाती है। सामाजिक परिवर्तनों में कानूनी और गैर-कानूनी दोनों ही मार्ग अपनाए जाते हैं। ये मार्ग वर्तमान सत्ता के हिसाब से गैर-कानूनी या कानूनी दोनों ही हो सकते हैं।

सामाजिक आन्दोलनों का महत्त्व और घटक

सामाजिक आन्दोलनों का महत्त्व उन विचारकों की कल्पना को अमली जामा पहनाने में है, जो यह मानते हैं कि किसी भी राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार किए बिना उसकी कमियों को दूर नहीं किया जा सकता। वे जो आदर्शात्मक सुझाव देते हैं, उसे ही एकमात्र रास्ता मानते हैं। आदर्श स्थिति स्थापित हो जाने के बाद भी अगर जनता उस व्यवस्था से खुश नहीं होती, तो उस आदर्श व्यवस्था से भी नाता तोड़ लेना चाहती है। इसे 'प्रतिक्रांति' कहा जाता है, लेकिन अधिकांश नेता और अधिकांश विचारक प्रतिक्रांति या क्रांति के बाद सुधार के लिए क्रांति को विघटनकारी और गलत मानते हैं, लेकिन ऐसी बातें तानाशाही वाले देशों में उचित मानी जा सकती हैं। लोकतांत्रिक प्रक्रिया जनता के लिए जीवन जीने की एक कला होती है, उसमें अगर कोई अन्तर्विरोध है, तो उसे सामने आने में कोई बुराई नहीं है। कोई भी सत्य अन्तिम सत्य नहीं होता, अत: कोई भी व्यवस्था चाहे वह कितने ही महान विचारक की कल्पना हो, अप्रासंगिक बनती ही है तथा समय के अनुसार उसमें परिवर्तन उस व्यवस्था व विचारधारा को मजबूत बनाने में मदद करती है, लेकिन दुर्भाग्यवश सामाजिक आन्दोलनों का महत्त्व केवल 'सत्ता प्राप्ति' रह गया है। एक बार सत्ता प्राप्ति के बाद लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना शासकों की संस्कृति बन चुकी है। लोगों के विचारों में भिन्नता लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत ही बनाती है। सामाजिक आन्दोलन किसी खास वर्ग या व्यक्तियों का संगठन होता है, अत: वर्गीय मतभेद लोकतांत्रिक शासन को सशक्त बनाता है। सामाजिक आन्दोलनों के माध्यम से सशक्तीकरण का सपना पूरा होता है। समाज के लाभों से वंचित वर्ग इससे फायदा उठाता है। उनको भी खुलकर अपनी बात रखने का मौका मिलता है। अत: सामाजिक आन्दोलनों द्वारा लोगों की भावनाओं का सामूहिक प्रदर्शन होता है। ये सामूहिक प्रदर्शन व भावनाओं की संगठित राजनीति सच्चे लोकतंत्र के आदर्श को पाने में मदद करते हैं। कुल मिलाकर इसके द्वारा लोगों को राजनीति को समझने में मदद मिलती है, जिससे बाद में सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था को समझने में आसानी होती है।

सामाजिक आन्दोलनों के घटकों में उद्देश्य, विचारधारा, कार्यक्रम, नेतृत्व व संगठन शामिल होते हैं। ये घटक एक-दूसरे से मिले हुए होते हैं। इनके द्वारा सामाजिक व राजनीतिक रूप से परिवर्तन लाने तथा उसमें सुधार का प्रयास किया जाता है। लोगों की संगठित भावनाओं को उद्देश्य बनाकर, हिंसक या अहिंसक साधनों द्वारा, किसी को अपना नेता मानकर, किसी विचारक की विचारधारा को तर्कसंगत परिणति तक पहुँचाने के लिए सामाजिक आन्दोलन किए जाते हैं, ताकि समाज का स्वरूप पहले की अपेक्षा सुधरे। सामाजिक आन्दोलन के घटक बढ़ भी सकते हैं, उनकी प्रकृति भी बदल सकती है। कभी-कभी उद्देश्य को पाते समय दूसरा उद्देश्य भी मिल जाता है और लोग उसकी तरफ उन्मुख हो जाते हैं।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

स्वपरख-अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. राजनीति को समझने में सामाजिक आन्दोलनों के अध्ययन का क्या महत्त्व है?

उत्तर–राजनीति सामाजिक गतिविधियाँ का ही एक अंग है। समाज में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ अर्थात सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक इत्यादि लगातार चलती रहती हैं। प्रत्येक गतिविधि किसी-न-किसी प्रकार से एक-दूसरे से प्रभावित होती रहती है। किसी भी खास क्षेत्र की गतिविधि को अगर समझना है, तो पूरी सामाजिक संरचना और उस संरचना में होने वाली गतिविधियों को नजदीकी से समझना आवश्यक होता है। सामाजिक आन्दोलन समाज में होने वाले सामूहिक क्रियाकलापों या कार्रवाइयों को कहते हैं। इसमें मुख्यत: सत्ता या राज्य के विरुद्ध या राज्य में सुधार का उद्देश्य लेकर कार्रवाइयाँ की जाती हैं। सत्ता और राज्य दोनों राजनीति के आवश्यक विषय हैं। अत: सामाजिक आन्दोलनों के द्वारा उस सामाजिक व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण अंग राजनीति को समझने में मदद मिलती है।

सामाजिक आन्दोलन दुनिया के प्रत्येक देश में संभवत: हर समय विद्यमान होते हैं। उनका रूप चाहे सामाजिक हो, सांस्कृतिक हो, धार्मिक हो, वे किसी-न-किसी प्रकार से शासक वर्ग के लिए चुनौती के रूप में होते हैं। कोई भी शासक जनता से यही अपेक्षा करता है कि वह पहले से चली आ रही स्थिति या परिस्थिति में ही अपने हितों को साकार करे, लेकिन समय के अनुसार उसमें सुधार की गुंजाइश हमेशा बनी ही रहती है। इस सुधार की अपेक्षा सरकार से जनता हमेशा रखती है, लेकिन जब जनभावनाओं का आदर और उनकी इच्छाओं की सामूहिक पूर्ति सरकार नहीं करती, तो वे सरकार पर दबाव डालने या उसे उखाड़ फेंकने के लिए तरह-तरह की गतिविधियों को संचालित करने लगते हैं। सामाजिक आन्दोलन उन्हीं गतिविधियों का नाम है। अत: सामाजिक आन्दोलन से वर्तमान राजनीति और उसके अन्तर्द्वन्द्व को नजदीक या अन्दर से जानने में सफलता मिलती है।

सामाजिक आन्दोलन के द्वारा राज्य के विभिन्न क्रियाकलापों, उसके दायित्वों, उसके आदर्शों व मूल्यों और उसके कार्य की सीमाओं को प्रभावित किया जाता है। ये आन्दोलन किसी-न-किसी प्रकार से सत्ता प्राप्ति या सत्ता-विमुख करने से सम्बन्धित होते हैं। इस प्रकार के आन्दोलनों द्वारा सत्ता या शासक के प्रकार चरित्र और उसके मन में छिपी भावनाओं को आसानी से जाना जा सकता है। ये आन्दोलन सत्ता परिवर्तन के साथ-साथ राजनीतिक प्रणालियों को भी बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अत: सामाजिक आन्दोलन अनिवार्य रूप से राजनीति से सम्बन्धित होता है।

सामाजिक आन्दोलनों के द्वारा न केवल व्यवस्था को बदलने का प्रयास किया जाता है, अपितु बाद की एक आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की रूपरेखा भी बनाई जाती है। इसके होने पर शासकों से नाराज जनसमूह के साथ-साथ भविष्य की राजनीतिक व्यवस्था को समर्थन मिलने वाले समूह का पता आसानी से हो जाता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी प्रकार से इन आन्दोलनों से जुड़ जाता है। कुछ व्यक्ति आन्दोलन के समर्थक होते हैं तथा कुछ विरोधी, कुछ लोग निष्क्रिय भी बने रहते हैं। राजनीतिक संगठनों व उनके चरित्रों को समझने के लिए जरूरी है कि उनके क्रियाकलापों व उनके राजनीतिक निर्णयों को गम्भीरतापूर्वक देखा जाए। वास्तव में आन्दोलन सरकार के क्रियाकलापों और निर्णय के विरुद्ध या समर्थन में होते हैं। अत: सामाजिक आन्दोलनों द्वारा सरकार के सारे अंगों के साथ-साथ उसकी प्रकृति को भी समझने में आसानी होती है।

उदाहरण के लिए, अगर किसी देश के संवैधानिक मूल्यों व आदर्शों को समझना है, तो हमें उन आन्दोलनों की जड़ में जाना होगा, जहाँ से इस प्रकार की संवैधानिक सरकार का जन्म हुआ है। अगर भारत के संविधान के मूल्यों व आदर्शों को समझना है, तो स्वतंत्रता आन्दोलन के समय होने वाली गतिविधियों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना पड़ेगा। साथ-साथ उस आन्दोलन में शामिल समूहों, उन नेताओं व विचारकों के विचार भी जानने पड़ेंगे, जिन्होंने इस महान आन्दोलन को खड़ा किया। सरकार किसी-न-किसी रूप में उन्हीं सिद्धांतों और व्यवहार पर चलती है, जिन आदर्शों के आस-पास उस सामाजिक आन्दोलन का ताना-बाना बुना गया था। सामाजिक आन्दोलनों के उद्देश्य ही इसी तरह बाद में सरकार और शासक वर्ग के उद्देश्य बन जाते हैं और जनता उनका समर्थन करती है। अत: सामाजिक आन्दोलन राजनीति के अंग सरकार के बारे में सारी जानकारियों को उपलब्ध कराते हैं।

रूडोल्फ हैबरली जैसे विचारक का मत है कि सभी सामाजिक आन्दोलनों का परिणाम राजनीतिक होता है, चाहे आन्दोलन की गतिविधि सत्ता प्राप्ति के लिए न हो, क्योंकि उस आन्दोलन में सरकार किसी-न-किसी रूप में शामिल हो जाती है, लेकिन आंद्रे ग्रुंडर फ्रांक और मार्ता फुंटेस जैसे विचारक इसे राजनीति से अलग करते हैं। उन दोनों का मानना है कि सामाजिक आन्दोलन व्यापकस्वरूप के होते हैं और उनकी माँग राजनीतिक स्वतंत्रता से आगे भी जाती है। सामाजिक आन्दोलन राज्य शक्ति से कुछ अधिक की अपेक्षा रखते हैं।

उपर्युक्त बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक आन्दोलनों से राजनीति से सम्बन्धित सारी जानकारियाँ हमें प्राप्त हो

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

जाती हैं, लेकिन सामाजिक आन्दोलनों का एकमात्र उद्देश्य राजनीति करना नहीं है, वे समाज की भलाई के उद्देश्य और अपने समूह के अधिकतम कल्याण से प्रेरित होते हैं। उनकी भूमिका व्यक्ति की अधिकतम स्वतंत्रता प्राप्ति में सहायक होती है।

प्रश्न 2. उपद्रव और सामाजिक आन्दोलन के बीच अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर–सामाजिक परिवर्तन लाने हेतु सामूहिक क्रियाकलापों को सामाजिक आन्दोलन कहते हैं, लेकिन प्रत्येक प्रकार की सामूहिक कार्रवाई को सामाजिक आन्दोलन नहीं कहा जा सकता। असल में सामाजिक आन्दोलन के लिए सामाजिक परिवर्तन का विचार होना बहुत जरूरी है, लेकिन कभी-कभी किसी कारणवश जनता इकट्ठा होकर विरोधात्मक प्रदर्शन या हिंसात्मक प्रदर्शन करने लगती है, जिसे उपद्रव कहा जाता है। अगर किसी बस द्वारा किसी व्यक्ति की जान ले ली जाती है, तो जनता उसकी प्रतिक्रिया में चक्का-जाम करती है, बस में आग लगा देती है, पुलिस पर पथराव करती है। इन क्रियाओं का रूप सामूहिक ही होता है, लेकिन इसे उपद्रव कहा जाता है तथा सरकार को इससे निपटने में आसानी होती है। उपद्रव किसी-न-किसी रूप में हिंसात्मक और कानूनी दृष्टि से असंगत होता है, जबकि सामाजिक आन्दोलन हमेशा हिंसात्मक नहीं होता तथा इसमें हमेशा गैर-कानूनी तरीके नहीं अपनाए जाते।

अगर दो समुदायों के बीच किसी मतभेद को लेकर मारपीट व हिंसा हो जाती है, तो इसे भी उपद्रव ही कहा जाता है, कारण इसमें इसका उद्देश्य एक का दूसरे को नुकसान पहुँचाना होता है। जबकि सामाजिक आन्दोलन में सुधार का ध्यान जरूर रखा जाता है। उपद्रवों का उद्देश्य सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाकर अपना विरोध प्रदर्शन करना होता है। उपद्रव किसी खास घटना की प्रतिक्रिया के रूप में जाने जाते हैं, लेकिन कभी-कभी उपद्रव सामाजिक आन्दोलन के हिस्सा भी बनते हैं। इस प्रकार सामाजिक आन्दोलन एक वृहत्तर कार्य है और उपद्रव उसका एक तरीका।

लेकिन उपद्रव कभी-कभी सामाजिक आन्दोलन का रूप ले लेता है। अगर दो सम्प्रदायों के बीच झगड़े, बाद में समुदायों के बीच चेतना को उजागर करने के लिए होने लगते हैं, तो वे सामाजिक आन्दोलन बन जाते हैं। अगर उपद्रव का उद्देश्य सत्ता प्राप्ति या किसी समुदाय विशेष को सत्ता प्राप्ति में हिस्सेदारी दिलाने के लिए कार्रवाई की जाती है, तो यह सामाजिक आन्दोलन का एक रूप ले लेता है। उपद्रव का रूप पहले सामाजिक होता है, लेकिन बाद में जब यह राजनीतिक रूप ले लेता है, तो वह राजनीतिक प्रक्रिया में भूमिका निभाने के कारण सामाजिक आन्दोलन का एक भाग हो जाता है।

उपद्रवों का प्रारम्भ में किसी घटना विशेष के विरोध में होना तथा उनका सामाजिक परिवर्तन के विषय में न सोचना सामाजिक आन्दोलन से उसे अलग करता है। किसी प्रकार के सामाजिक उत्पात व विरोध रैलियों को सामाजिक आन्दोलन का दर्जा नहीं दिया जा सकता, लेकिन उत्पात की कार्रवाई जब बाद में वृहत्तर रूप ले लेती है तथा सामाजिक परिवर्तन एक लक्ष्य के रूप में स्थापित हो जाता है, तो वह सामाजिक आन्दोलन बन जाता है। प्रारंभ में झारखंड राज्य के लिए अलग हिंसात्मक विरोध प्रदर्शन उत्पात की संज्ञा के रूप में जाना जाता था, लेकिन बाद में इसका रूप एक राजनीतिक आन्दोलन के रूप में परिवर्तित हो गया। अत: उपद्रव और सामाजिक आन्दोलन विश्लेषणात्मक रूप से सहगामी भी हो सकते हैं, लेकिन दोनों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर भी होता है।

कभी-कभी एक ही प्रकार के आन्दोलन को कुछ लोग उपद्रव कहते हैं, तो कुछ लोग इसे सामाजिक आन्दोलन का दर्जा देते हैं। वास्तव में उपद्रव तभी सामाजिक आन्दोलन का रूप बन जाता है, जब उसका उद्देश्य सार्वजनिक जीवन से जुड़ जाता है। लेकिन सामाजिक आन्दोलन और उपद्रव में अन्तर बहुत हद तक कम ही होता है, बस उद्देश्य बदल जाने से उनके बीच खास अन्तर नहीं रह जाता। निष्कर्ष में हम यही कह सकते हैं कि उपद्रव सामाजिक आन्दोलन से किसी खास परिस्थिति विशेष में अलग हो सकता है तथा किसी खास विशेष स्थिति में उसके भाग के रूप में भूमिका निभाता है।

प्रश्न 3. सामाजिक आन्दोलन की विभिन्न परिभाषाओं में सामान्य तत्त्व क्या हैं?

उत्तर–सामाजिक आन्दोलन का अर्थ और परिभाषा अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग की जाती है। कुछ विचारक इन्हें शहरीकरण अथवा ग्रामीण जीवन से मुक्ति के सन्दर्भ में प्रयोग में लाते हैं, तो कुछ लोग उन संगठनों की गतिविधियों से जोड़ते हैं, जिसमें समाज की भलाई हो। सामाजिक आन्दोलन, सामाजिक गतिविधि और राजनीतिक गतिविधि (जो उनकी प्रकृति को देखते हुए लगाया जाता है) के रूप में भी प्रयुक्त होता है, लेकिन 19वीं शताब्दी में यह शब्द यूरोप में लोकप्रिय हुआ और उसका अर्थ उस समय विद्यमान धर्म के चंगुल और सामंतवादी व्यवस्था से मुक्ति के सन्दर्भ में लगाया गया। वहाँ के लोग धर्म सुधार आन्दोलनों से प्रभावित होकर उस समय जनतांत्रिक अधिकारों और उनसे सम्बन्धित राजनीतिक संस्थाओं के लिए संघर्ष कर रहे थे। मार्क्सवादी विचारक इसे आर्थिक सम्बन्धों से भी जोड़ते हैं और वे मानते हैं कि

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com